ISSN 2249-5029

विशेष स्मरणिका

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पुरस्कृत द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में वेब मीडिया का योगदान

दिनांक - ४ एवं ५ सितम्बर २०१५

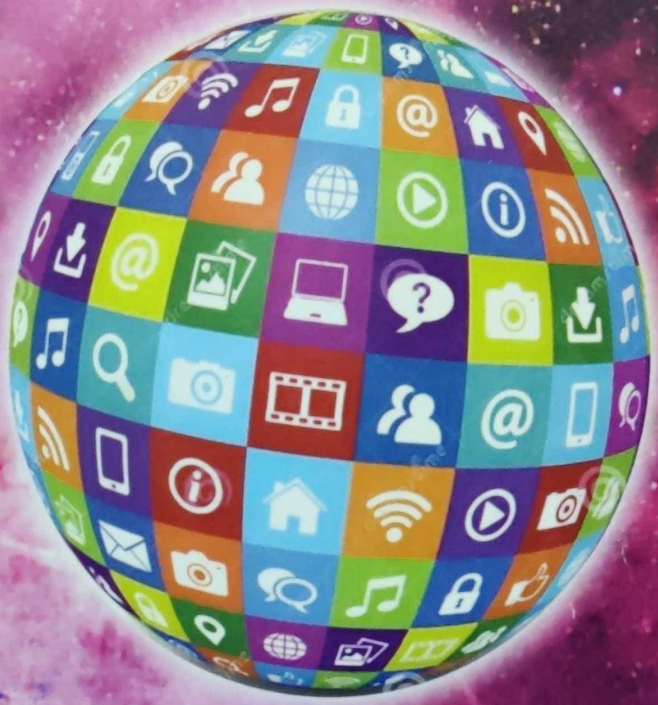

Indian Journal of Innovative Research in Arts

(Interdisciplinary Journal)

Annual | Valume - 6 | Issue - 11 | September 2015

Advisory Board

Dr. Ooi Foong Kiew
Senior Lecturer
Sports Science Unit,
School of Medical Sciences
University Sains Malaysia

Dr. Chen Chee Kong
Senior Lecturer
Sports Science Unit,
School of Medical Sciences
University Sains Malaysia

Dr. B.B. Choudhari
Ex.Joind Director
Higher Education
Amravati Division, Amravati

Prof.Vivek Deshmukh
Ex. Dean,Sant Gadgebaba
Amravati University,
Amravati

Dr. R.Y.Mahore,
Director, Raisoni Group of Education,
Mahavir Education Foundation Society,
School of Management Studies,
Madhav Nagari, Nagpur-16

Dr. R. B. Bhandwalkar
Reader,
Post Graduate Dept. of Economics
Amolakchand Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Sudhir Trikande
Head Dept. of English
Shivshakti Mahavidyalaya, Babhulgaon.

Prof. Vikas Tone
Physical Director,
Shivshakti Mahavidyalaya, Babhulgaon.

Editorial Board

Dr. Jayant Chatur
Principal,
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Sanjay Rachalwar
Head, Dept. of Economics
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Nilesh Autkar
Head, Dept. of English
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Siddharth Jadhav
Head, Dept. of History
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Nikhilesh Nalode
Dept. of Music
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Rajabhau Bajad
Librarian,
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Dr. Rashmi Gajre
Head, Dept. of Home Economics
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Kalpana Godghate
Head, Dept. of Political Science
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Vandana Ingole
Head, Dept. of Music
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Jaydev Wankhede
Head, Dept. of Marathi
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Nitu Shende
Director of Physical Education
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Vishakha Dere
Head, Dept. of Sociology
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof. Digambar Wankhede
Dept. of English,
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

Prof Dr.Surekha Mantri
Head, Dept. of Hindi
Smt. Nankibai Wadhwani
Kala Mahavidyalaya, Yavatmal

नरेदकुमार विसपुते	इलेक्ट्रॉनिक मिडिया कि शिक्षा तथा सामाजिक क्षेत्र मे उपयोगीता	१३०-१३४
प्रा. सोनाली मोरे	मीडिया और साहित्य का अंत: संबंध	१३५-१३६
कु. सुषमा शिवमोहन उपाध्याय	हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में वेब मीडिया का योगदान	१३७-१३९
सचिन रमेशराव निभोरकर	डिजिटलीकरण आज की आवश्यकता	१४०-१४१
कु. सोनिया.सी.शर्मा	डिजिटलीकरण : आज की आवश्यकता	१४२-१४३
डॉ. नीलम एम जुगारे	उच्च शिक्षा के क्षेत्र में वेब मीडिया की उपयोगिता	१४४-१४५
कु. मोनिका अ. सोनटक्के	हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में वेब मीडिया का योगदान	१४६-१४७
चेतन भट	डिजिटलीकरण: आज की आवश्यकता	१४८-१५२
ऋतुध्वज सिंह	हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में ब्लॉग की भूमिका	१५३-१५८
सुम्मी कुमारी	हिंदी भाषा शिक्षण मे ई लर्निंग ई बुक्स की उपयोगीता	१५९-१६२
जयदीप राजेंद्र देशमुख	समाचार पत्रों में इन्फ्रमेशन टेक्नोलोजी (सूचना प्रौद्योगिकी) से संबंधित समाचार एवं लेख प्रकाशित होने का बढता चलन	१६३-१६५
डॉ. अरूणा राजेंद्र शुक्ल	पत्रपत्रिकाओं के विकास में वेब मीडिया का योगदान	१६६-१६७
प्रा. डॉ. संतोष येरावार	वेब मीडिया के दौर में	१६८-१७०
प्रो. श्रीमती सुन्नी नागेंद्र सिंह	डीजीटलीकरन ! आज की आवश्यक्ता	१७१-१७२
कु. सुनिता रामचंद्र पंडित	हिंदी भाषा संसाधन में वेब मीडिया का महत्त्व	१७३-१७४
कार्तिक संजय उमाटे	भाषा व साहित्य में वेब मीडिया की उपलब्धियॉं	१७५-१७६
कु. प्रणाली कैलास मेश्राम	वेब मीडिया के दौर में ई-बुक्स की उपयोगिता	१७७-१७८
आकाश अरूणराव होटे	पत्र-पत्रिकाओं के विकास में वेब मीडिया की भूमिका	१७९-१८०
कु. दीपाली रमेश पारधी	वेब मीडिया में इंटरनेट, फेसबुक और ब्लॉगिंग	१८१-१८२

वेब मीडिया के दौर मे – ई–बुक्स की उपयोगीता

प्रा.डॉ.संतोष येरावार
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

ूमण्डलीकरण, निजीकरण, बाजारवाद और सूचना–विस्फोट के कारण से वेबमीडिया का दायरा काफी विस्तृत हुआ है ं कागज और कलम रहित माध्यम के रुप में वेब–मीडिया की पहचान है ं हिंदी ने वेनमीडिया में अपना महत्वपुर्ण स्थान बना लिया है ं वेब मीडिया वर्तमान समय में हिंदी ाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपुर्ण ूमिका नि ा रहा है ं वेब मीडिया ने हिंदी को गौरवपुर्ण स्थान दिलाने में सहायोग किया है ं वेब मीडिया के प्रावस्वरुप ही आज ारत के अलावा और ी कई देशो में हिंदी संबधित कार्य हो रहे है ं कई पत्र–पत्रिकाएँ, बुक ऑनलाईन उपलब्ध है जिससे सहजतासे पाठक पढ सकता है ं

वेब मिडिया ने समाज के समस्त ञ्चेत्र को प्रावित किया है ं वेब मीडीया ने सुल रुप से, सर्वत्र और चोवीसो घंटे सूचना संचार का ऐसा मौका प्रदान किया है जो स ी के पहुँच में है ं देश में एक ही स्थान से केंद्रिकृत ट्रेन – वायुयान आञ्चण सिस्टम, डिजीटल जन संचार सेवा, सूचना तंत्र, अंतरिक्ष विज्ञान साहित्य, ञ्जंत्रज्ञान, शिञ्चा, औद्योगिक विस्तार, मनोरंजन, बँकिंग, मुद्रण, पत्रकारिता, ज्योतिष, ऑनलाईन शॉपींग आदि ऐसे तमाम ञ्चेत्र है, जहाँ वेब तकनीक के प्रयोग ने करोंडो लोगो के जीवन को आसान बनाया ं वैश्वीकरण एवं डिजीटलीकरण के दौर में डिजीटल सुचना तकनीक को स ी ने अपनाया और वेब मीडिया को आसमान सी ऊँचाई प्रदान की ं आज शिञ्चा से जुडा प्रत्येक माध्यम वेब मीडिया पर उपलब्ध हैं ं वेब मीडिया नें ारत में गेम – चेंजर की ांति कार्य किया है ं हर ञ्चेत्र में वेब मिडीया ने अपनी शक्ति और उपयोगिता दिखाई है ं

आज शिञ्चा से जुडा प्रत्येक माध्यम वेब मीडिया पर है ं तकनीक, विज्ञान, स्वास्थ, पत्रकारीता, साहित्य, फिल्म, महिला, वित्त, बँक, बाल, पुरुष, सौन्दर्य, शिञ्चा, ज्योतिष, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, व्यापार, सहकार, उद्योग, रोजगार, सरकारी एवं निजी संस्थान, खेल, पर्यटन, ग्रामीण, ञ्चेत्रीय, आदि विविध विषयों पर समुचित सामग्री आज वेब माध्यम पर हिंदी मे उपलब्ध हैं ं सुधीश पचैरी के अनुसार भहिंदी का नौजवान पिढी उत्तर आधुनिकता समाज में रहती है ं वह मीडिया, तकनीक, बाजार में रहती है ं इसलिए उत्तर आधुनिकता उसके जीवन से काफी नजदीक है

वेब मिडिया आने के पूर्व साहित्य कृञ्जियाँ पाठको तक पहूँचाना कठिन होता था ं वेब मीडिया के कारण साहित्य कृञ्जियाँ सहजतासे पाठक तक पहूँच रही हैं ं साहित्यकार अपने लेखन को सीधे पाठकों तक पहुँचा सकते हैं ं उन्हे न किसी प्रकाशन की आवश्यकता है, न किसी विक्रेज्ञा की ं ब्लॉग, यु–टयुब, फेसबुक, गुगल प्लस, टविटर, मेसंजर ॲप आदि के जरिए लेखक सहज रुप से पाठक तक पहूँच रहा है और प्रज्ञिक्रिया ी प्राप्त हो रही हैं ं ई – बुक की सुविधा ी वेब मीडिया के कारण सं व हुई हैं ं ई – बुक अत्यंज्ञ सहजतासे उपलब्ध होते है और उनका मुल्य ी बाजार से कम होता है ं

ई बुक हुबहू एक मुद्रित किताब के समान है जिसे पढने के लिए कॅम्प्युटर और लॅपटॉप जैसे डिजिटल डिवाइस की जरुरत पडती है ं ई – पुस्तक (इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक) डिजिटल रुप में पुस्तक हैं ं वर्तमान में ई – बुक्स पढने के लिए – ई – बुक रीडर्स बाजार मे उपलब्ध हैं ं ई – बुक रीडर्स के कारन पाठक सहजत साहित्य कृती से अवगत हो सकता हैं ं साहित्यकारों के लिए ी ई – बुक रीडर्स अत्यंत कारगर साबित हो रहे हैं ं ई – बुक रीडर्स के कारन प्रकाशक की

मनमानी सें साहित्यकारों को छुटकारा मिल गया हैं' और छात्र तथा पाठक भी साहित्य कृती को सहजतासे कहाँ भी किसी भी समय प्रयोग कर सकते हैं' ई – बुक का लॅपटॉप, टॅबलेट और स्मार्ट फोन के द्वारा भी आनंद लिया जा सकता हैं' अमेजन का किंडल, सोनी का ई – बुक रीडर, गुगल ई – बुक स्टोर काफी लोकप्रिय हैं' ई – बुक्स अपनी सुलभता के कारण तेजी से लोकप्रिय हो रहा है' ई – बुक ने किताबों की दुनिया में क्रांति लायी है'

ई – बुक्स मद्रित किताब की तुलना मे सस्ती तथा पठन में सहज होने के कारन ई – बुक्स ने मुद्रित किताबों को पीछे छोड दिया हैं' ई – बुक्स का लागत मुल्य कम होने के कारन और आसानी से उपलब्ध होने के कारन प्रकाशक, लेखक, पाठक एवं छात्र सभी को फायदेमंद साबित हो रही हैं' ई – बुक्स के कारन रोजगार की नवीन सभावनाएँ भी उपलब्ध हो गई है' हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के लेखक ई – प्रकाशक के माध्यम से अपनी – ई बुक्स प्रकाशित करवा सकते हैं' अपनी सभी मन पसन्दीता पुस्तकों को ई – बुक रिडर, ट्रॅबलेट, स्मार्ट फोन में हर समय साथ रखने और मनचाहे समय पर मनचाही पुस्तक पढने की सुविधा के कारन ई – बुक का प्रचलन दिन प्रति दिन बढता जा रहा हैं' ई पुस्तक दो पध्दती से बनाया जा सकता है, कम्पुटर पर टाइप की गई सामग्री को विभिन्न सॉप्टवेयरों के द्वारा ई – पुस्तक रुप मे बदला जा सकता है' तथा छपी हुई सामग्री को स्कॅनर के द्वारा डिजिटल रुप मे परिवर्तित करके उसे ई पुस्तक का रुप दिया जा सकता है'

युवा वर्ग वर्तमान समय में डिजीटल हो गया हैं जिस कारन ई – पुस्तक उसके लिए अत्यंत उपयुक्त साबित हो रही हैं' ई – बुक के कारन पाठक को विविध ऋचेत्र का साहित्य, प्रवाह, विचारधारा, एवं साहित्य के नए–नए विषयों का बोध हो रहा हैं' पाठक ई – बुक के कारन हर समय किताबों से जुड गया हैं' ई – पुस्तक के बढते प्रचलन एवं प्रभाव के कारन नए – नए साहित्यकार विश्वपटल पर अपनी छाप छोड रहे है' आजकल हिन्दी भाषा के साथ साथ अन्य भारतीय भाषा तथा विदेशी भाषाओं में साहित्य इंटरनेट पर उपलब्ध हैं' यह उन लोगों के लिए वरदान है जो देख नहीं सकते' ई – बुक्स को सिर्फ पढा नहीं बल्कि सुना भी जा सकता हैं' ई – पुस्तक के अंतर्गत पाठक वर्ग विश्व के प्रसिध्द, प्रभावी, समाजउपयोगी व्यक्ति विकास संबंधित सामग्री एवं रचनाएँ पढ – सुन सकते हैं' प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति आचार – विचार, रीति रिवाज, सभ्य ता, एवं ज्ञान के स्तोत्र होते हैं'

ई – बूक के कारन हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा का साहित्य एवं विदेशी भाषाओंका कालजयी साहित्य सहजता से पाठक को प्राप्त हो रहा हैं' ई – बुक के कारन हिन्दी भाषा के साहित्य का प्रचार – प्रसार भी विश्व पटल पर हो रहा हैं' हिन्दी साहित्य को विश्व साहित्य की कतार में खडा करने के लिए ई – बुक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं'

ई – पुस्तक को इन्टरनेट पर छापा, वितरित, या पढा जा सकता हैं' पी.डी.ऍफ ई – पुस्तकों के लिए ऍडॉब रीडर तथा फॉक्सिट रीडर नामक दो प्रसिध्द पाठक हैं' एक बार ई – बुक विकसित और प्रकाशित होने के बाद लेखक उसकी अनेकों फाईले बनाने के लिए स्वतंत्र हैं' इसलिए लेखक, प्रकाशन की लागत कम होती हैं जिससे वह सस्ते में पाठक को उपलब्ध होती हैं ' ई – पुस्तक के कारण किताबों को पढने वालो की संख्या वृध्दीगंत हुई है और जो पाठक वर्ग किताबो से दूर चला गया था वह भी ई – बुक्स के माध्यमसे किताबो को पढने लगा है' विश्व साहित्य के कारण विभिन्न राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक परिस्थीती का बोध ई पुस्तक के माध्यम से होने में सहजता होती हैं क्योकि सभी भाषाओं की किताबे इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध है' वेब – मीडिया के आगमन से पहले विविध राष्ट्र और भाषा की किताबे आम वर्ग के बस की बात नही थी' लाइब्रेरी, प्रकाशन, पुस्तकालय के तरफ पाठक मुँह मोड रहे हैं और ई – पुस्तकों को अपना रहे हैं' इसी कारन वेब मीडिया में ई – पुस्तकों का बोल बाला हैं' नीत – नए बुक रीडर एवं ॲप आ रहे हैं' जैसे एमैजॉन किण्डल स्टोर, गुगल प्ले स्टोर, सोनी ई रीडर, कोबो ॲडराईड बुक ;फिल्प कार्ट (Flipkart) स्वतंत्र बुक स्टोर पॉवेल,

ISSN 2249 – 5029

ऑनलाईन बुक शॉप एलिब्रिया, वेबदुनिया हिन्दी मोबाईल ऐप, हिन्दी, नोबेल इ – बुक, न्युज हंट आदि गुगल इंजन पर तीस लाख से अधिक किताबे हैं जिसमें मुक्त पढी जाने वाली भी किताबे उपलब्ध हैं गुगल ने सौ देशों के, चार सौ भाषाओं में करीब डेढ करोड किताबो को डिजीटल फार्मेट में बताया है, ई – बुक्स को किसी भी डिवाइस के जरिए पढा जा सकता हैं इसलिए ई – बुक लोकप्रिय हो रही हैं

निष्कर्षत : यह कहता जाता है कि, ई – बुक ऐसी तकनीकी किताब है, जो लेखक, प्रकाशक और पाठक सभी के लिए फायदे का सौदा है ई – पुस्तक सहज एवं सस्ते में उपलबध होने के कारन अत्यंत उपयुक्त एवं प्रभावी हैं ई – पुस्तक के कारन पाठक अनेको पुस्तकों को कहीं भी, किसी भी समय पढ सकता हैं ई – पुस्तक के कारण नए साहित्य कारों को प्रेरणा प्राप्त हो रही हैं और वे अपनी छाप विश्वपटल पर छोड रहे हैं ई पुस्तक के कारण हिन्दी भाषा, सभी भारतीय भाषा एवं विदेशी भाषा का साहित्य सहजतासे पाठक को उपलब्ध होता हैं ई – पुस्तक के कारन ज्ञान – विज्ञान ज्ञचेत्र से परिचय होझा है ई – पुस्तक ने रोजगार की संभावनावों को भी बढाया हैं ई – पुस्तक को किसी भी डिवाईस के जरिए पढा जा सकता हैं, जिससे वह अधिक लोकप्रिय हुआ हैं समय के साथ यह चलन और बढेगा तथा और अधिक लोग ई – बुक्स को अपनाएँगे जिस ज्ञरह से समाज के हर वर्ग नें वेब मीडिया को अपनाया है, आनेवाले समय में इसकी स्वीकार्यता और उपयोगिता और अधिक मात्रा में बढेगी

संदभ :

1. सुचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र , रविद्र शुक्ला, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली.
2. वेब मीडिया और हिंदी (आलेख) – डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा (Sahityaragini.com.)
3- www.Rrabakta.com.
4- Gooleweblight.com.
5- dainiktribuneonline.com.
6- vicharpanchayat.blogspot.com.
7- eprakwhak.comwhatis.cbook.
8- suryakant.blogspot.lam.
9. bouendy.com.events.
10- www.dw.com.
11- shabadomagari-in.website.
12- livehindustan.com.

****